BRAHM RISHI KRISHAN DUTT JI MAHARAJ ONLINE
AUGUST PATRIKA 2011

।। ओ३म् ।।

विष्णु के स्वरूप

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भांति कुछ मनोहर वेद-मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। यह भी तुम्हे प्रतीत हो गया होगा आज हमने पूर्व से जिन वेद-मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहां परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद-वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद-वाणी में उस परमपिता-परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। वह परमपिता-परमात्मा अनन्तमयी मान गये हैं और जितना भी यह जड़-जगत अथवा चैतन्य-जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है उस सर्वत्र ब्रह्मांण्ड के मूल में प्रायः वह परमपिता-परमात्मा दृष्टिपात आते रहते हैं क्योंकि वह चैतन्य हैं विज्ञानमयी हैं। क्योंकि उसका जो ज्ञान और विज्ञान है वह अनन्तमयी है। क्योकि सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके वर्तमान के काल तक नाना विज्ञानवेत्ता हुए हैं और परन्तु कोई विज्ञानवेत्ता ऐसा नहीं हुआ जो उस परमपिता-परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान को सीमाबद्ध कर सके। क्योंकि वे परमपिता-परमात्मा ज्ञान और विज्ञान में रत्त हैं और उसका ज्ञान और विज्ञान इतना अनन्तमयी है क्या कोई विज्ञानवेत्ता ऐसा नहीं हुआ जो उस परमपिता-परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान को सीमाबद्ध कर सके। क्योंकि वह सीमा से रहित हैं हम उस परमपिता-परमात्मा की महिमा का सदैव गुणगान गाते रहें। वह परमपिता-परमात्मा अनन्तमयी है और जितना भी यह जड़ और चैतन्यमयी जगत दृष्टिपात आ रहा है उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड का वह मूलक बना हुआ है और उसका ज्ञान और विज्ञान इतना महान और पवित्रतम कहलाता है क्या सृष्टि के आदि से ही मानव उसके ऊपर अन्वेक्षण करता रहता है। तो हम सर्वत्र प्राणी जितने भी हैं वह सर्वत्र उस परमपिता-परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान का

प्रभु से विनय

हे परमात्मन तू अनुपम है। तू संसार को चेतना प्रदान करने वाला है। प्रभु! हम भी उस महान चेतना को चाहते हैं जिस चेतना में मानव को अन्धकार प्राप्त नहीं होता। सदैव प्रकाश ही प्रकाश रहता है। जो मानव उस महान ब्रह्ममुख में परणित हो जाता है, ब्रह्म चेतना में रमण करने लगता है उसे सर्वत्र ब्रह्म ही ब्रह्म प्रतीत होने लगता है। तो वह मानव इस संसार में उज्जवलता को प्राप्त होता हुआ उस महान मंडल में परणित हो जाता है जहाँ अन्धकार नहीं होता, जहाँ सूर्य भी अस्त नहीं होता, जहाँ न सूर्य उदय होता है न अस्त होता है, एक रस रहने वाला है। इसीलिए आज हम अपने उस प्यारे प्रभु का गुणगान गाने के लिए आये हैं। हे परमात्मा! आज हम उन महान् लोकों को चाहते हैं, जहाँ अन्धकार नहीं होता, जहाँ सदैव प्रकाश होता है। इसलिए हम आपकी आराधना करते हुए इस मानवता से देवत्व में जाना चाहते हैं। देवत्व से भी प्रभु! हम महादेवत्व बनना चाहते हैं। जिससे भगवन्! हमारे हृदय में किसी प्रकार की विडम्बना न होने पाये। क्योंकि वह जो विडम्बना होती है यह मानव के विनाश का मूल कारण बनती चली जाती है। प्रभु! हम अपने हृदय में प्रसन्नता चाहते हैं, महत्ता चाहते हैं, उज्जवलता चाहते हैं। जिससे भगवन्! हमारा जीवन एक आनन्द में परणित होता हुआ महत्ता की वेदी पर रमण करता हुआ इस संसार-सागर से पार होने लगता है।

पूज्यपाद गुरुदेव

अंक : 467 समग्र अंक : 542
वर्ष : 39 समग्र वर्ष : 46

अनुक्रम

क्रम संख्या	विषय		पृष्ठ
1.	प्रभु से विनय	पूज्यपाद गुरुदेव	1
2.	विष्णु के स्वरूप	पूज्यपाद गुरुदेव	3-15
3.	षोड़श-कला	पूज्यपाद गुरुदेव	16-29
4.	उद्बोधन	पूज्यपाद गुरुदेव	30
5.	पूज्यपाद गुरुदेव का जन्मोत्सव समारोह एवम् याग		31
6.	दान विवरण इत्यादि		32

श्रावणी-पर्व

परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा और पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की पावमानी प्रेरणा से **रक्षाबन्धन** के शुभावसर पर दिनाँक 13-8-2011 दिन शनिवार को प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी लाक्षागृह बरनावा में सामवेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ का आयोजन गाँधी धाम समिति (पंजी.) द्वारा किया जा रहा है। आप सभी इस यज्ञ में अपने परिवार, सगे-सम्बन्धियों एवम् मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।

गाँधी धाम समिति (पंजी.)

आत्मा का नाम यहां विष्णु शब्द से सम्बोधित किया गया है। मेरे प्यारे देखो जब यह आत्मा जब यौगिक बन जाता है, यौगिक मानों क्षेत्र में प्रवेश करता है तो उस समय यह अक्षय क्षीर सागर में वास करता है और अक्षय-क्षीर-सागर में जब पहुंच जाता है तो बेटा देखो वही नारद अपनी चंचल रूपी वीणा को ले करके इसके समीप आना प्रारम्भ हो जाता है और नारद अपना गन्धर्व गान गाता हुआ मंगलम ब्रह्मे देखो गन्धर्व गान गाने लगता है। आचार्यों ने इसकी विवेचना करते हुए कहाँ है क्या नारद वह कौन है जो ज्ञान गाता अपनी वीणा के सहित बेटा वही तो नारद कहलाता है। यह चंचल है और मन चंचल होने से इसको नारद कहां गया है और मुनिवरों देखो अक्षम ब्रह्मा यह अपनी चंचल रूपी जो वीणा है उसको उसका तारतम्य बना लेता है और वह तारतम्य बना करके उसको स्वरों में परणित कर देता है वह स्वर सगम में प्रवेश करता हुआ मानों देखो अपने में अपनेपन का व्यवधान करने लगता है और वह जो गन्धर्व जिसका नाम बुद्धि वाचक है मानों वह गान गाने लगती है अमृतम ब्रह्मा वर्णस्सुतम ब्रह्मा मेरे प्यारे देखो वह अपने में गन्धर्व बन करके गान गाना प्रारम्भ करती है। अपराम भूतम ब्रह्मा मेरे प्यारे! देखो वही तो अपने में वृत्ति कहलाता है। तो विचार आता रहता है कि गन्धर्व नाम बुद्धि का है और मन नाम नारद का है और लक्ष्मी बेटा देखो उसके योगी के चरणों में ओत-प्रोत हो जाती है।

हृदय का परमपिता-परमात्मा से मिलान

जब यह योगाभ्यास करता है मानों वह आत्मा को जानने के लिए तो बेटा देखो यह अपने में योगाभ्यास करता है यह मानों देखो कहीं हठ योग प्रदीपका में रमण करने लगता है कहीं ध्यानावस्थित हो जाता है। तो विचार आता है बेटा देखो वह जो आत्माम भूतम ब्रह्मा यह जो विष्णु है जब यह प्राण के साथ में धुक-धुकी लगाता है तो बेटा सबसे प्रथम यह मूलाधार में जाता है। सबसे प्रथम मानों देखो मूलाधार से गमन करता हुआ नाभि चक्र में प्रवेश करता है और नाभि चक्र में बेटा जो नाना प्रकार के मानों वायु गमन करती है उस पर अधिपत्य करने लगता है। आगे गमन करता है तो वह हृदय चक्र में प्रवेश हो

अन्वेक्षण करते रहें अथवा उसके ज्ञान में ही रत्त रह करके अपने मानवीयत्व को ऊँचा बनाने में सदैव तत्पर रहें कि वह अनन्तमयी हैं।

विष्णु शब्द की व्याख्या

तो आओ मुनिवरों आज का हमारा वेद-मन्त्र क्या कह रहा है कि वह परमपिता-परमात्मा अनन्तमयी है। आज के हमारे वेद के पठन-पाठन में प्रायः विष्णु का वर्णन आ रहा था और यह उच्चारण किया जा रहा था विष्णु ब्रह्मा, ब्रह्मा क्रतम वाचन नमम ब्रम्हे क्रतम देवा। वेद का मन्त्र कहता है कि परमात्मा का नामोकरण विष्णु माना गया है क्योंकि वह पालन करने वाला है और पालना का मूलक माना गया है। तो वह परमपिता-परमात्मा का नामोकरण विष्णु है परन्तु जब हम पर्यायवाची शब्दों में प्रवेश करते हैं और पर्यायवाचियों में अमृतम मानों देखो यहां नाना रूपों में विष्णु दृष्टिपात आता रहता है। जैसे विष्णु नाम परमात्मा का है इसी प्रकार विष्णु नाम आत्मा का है और विष्णु नाम सूर्य का है और विष्णु नाम माता का है और विष्णु नाम और भी नाना प्रकार के प्रयायवाची माने गये हैं। परन्तु आज मैं पर्यायवाची शब्दों में न जाता हुआ केवल यह कि वह परमपिता-परमात्मा विष्णु है और वह पालन करने वाला है। परन्तु जहां भी पालना का मूलक आता है, प्रसंग आता है वही विष्णु शब्द हमें दृष्टिपात आने लगता है और वह नाना मानों रूपों में दृष्टिपात आने लगता है जैसे विष्णु नाम परमात्मा का है तो आत्मा का नाम भी है क्योंकि वह परमपिता-परमात्मा जो सृष्टि का नियन्ता अथवा निर्माणवेत्ता है, नियामक है। तो हम उस परमपिता-परमात्मा विष्णु की याचना करते रहें। परन्तु देखो जहां विष्णु नाम बेटा परमपिता-परमात्मा जो पालना में नियमित रहने वाला है जैसे मानों देखो पालना में परमपिता-परमात्मा इसी प्रकार पालना के मूल में माता भी विद्यमान होती है। तो माता का नाम भी विष्णु माना गया है। मेरे प्यारे देखो पालना में हम जैसे शिशुओं का पालन करने वाली वह अमृतम ब्रह्मा वह माता कहलाती है। माता ही बेटा पालन कर रही है। लोरियों का पान करती कहती है बुद्धम, शुद्धम, निरंजन। इस प्रकार मुनिवरों देखो अपने उदगार गाती

रहती है और लोरियों का पान कराती मानों देखो उसका पालन कर रही है तो इसलिए माता का नाम भी विष्णु माना गया है क्योंकि वह पालना के मूल में विद्यमान रहती है, पालना करने वाली लोरियों का पान कराती है। तो माता अपने विचारों को महान और विचित्रता में ले जाती है मानों देखो उसे लोरियों का पान कराती है। तो उस माता का नाम विष्णु है क्योंकि वह पालना के मूल में सदैव विद्यमान रहती है।

तो जहां माता का नाम विष्णु है वही बेटा देखो माता तीनों गुणों में निहित रहने वाली है मानों देखो तीनों गुणात्मक यह ब्रह्मांण्ड अपने में परणित होता रहा है। त्रिगुणात्मक मानों देखों सत, रज और तम मानों देखो यह तीन प्रकार के गुणों से यह ब्रह्मांण्ड अपने में सुशोभित हो रहा है और यह ब्रह्मांण्ड मानों तीनों गुणों में निहित रहने वाला है। प्रत्येक मानव के अन्त जीवन में बेटा देखो यह तीन गुण विद्यमान होते हैं। सतोगुण में पालना है और रजोगुण में अनुशासन है और तमोगुण में मेरे पुत्रो देखो अमृतम् उत्पत्ति का मूल विद्यमान रहता है। तो इसीलिए माता में तीनों गुणों का व्यवधान प्राप्त होता रहता है। माता बेटा सतोगुण से पालन करने वाली है और रजोगुण में उसको हम अपने में अनुशासन करती है और तमोगुण में मानों देखो उत्पत्ति के मूल में वह माता विद्यमान रहती है। तो बेटा देखो उस माता का नाम विष्णु है और वेद मन्त्र कहता है विष्णु ब्रह्मा व्रते देवत्वाम हे माता तू विष्णु है। वेद ने तुझे विष्णु कहां है परन्तु जहां विष्णु है वहां अनुशासन में रहने वाली मानों देखो रज में विद्यमान है और तमोगुण में बेटा देखो उत्पत्ति का मूल है परन्तु वहां भी एक दुसरे का एक दुसरे में समावेश होता हुआ दुष्टिपात होता रहता है, वही सतोगुण है, वही रजोगुण है, और वही तमोगुण के मूल में विद्यमान रहता है। तो इसीलिए हम उस परमपिता-परमात्मा जो तमोगुण के रूप में विद्यमान जो माता को अपने में मानों देखो निहित हो के अपने में मानों पालना का मूल विद्यमान रहता है।

आत्मा का नाम भी विष्णु

आओ बेटा! देखो जहां परमात्मा का नाम विष्णु है वहां विष्णु नाम बेटा देखो माता को भी कहां गया है जहां माता का नाम विष्णु है वही आत्मा का नाम भी विष्णु माना गया है। मेरे प्यारे आत्मा जब तक मानव के शरीर में विद्यमान रहती है तो देखो यह मानव का शरीर चेतनित बना रहता है, वह चेतना में पालना के मूल में विद्यमान रहती है। यदि आत्मा जब इस शरीर से निकल जाती है तो मानव का शरीर एक बिन्दु की नाइ बन जाता है परन्तु जैसे बिन्दु अप्रतम मानों शून्यत्व को प्राप्त हो जाता है, इसी प्रकार आत्मा भी मानों देखो पालना के मूल में विद्यमान है। जब तक आत्मा इस शरीर में मानों विद्यमान रहता है तब तक मानव का शरीर चेतनित बना रहता है और जब आत्मा निकल जाता है तो यह मानव का एक शरीर नहीं मानों शव के रूप में विद्यमान हो जाता है। तो विचार आता रहता है कि विष्णु नाम बेटा जहां पालना का मूलक माना गया है वही विष्णु शब्द की विशेषता मानी गई है। तो इसीलिए आत्मा का नाम भी विष्णु माना गया है।

अक्षय-क्षीर-सागर में विष्णु भगवान

तो मेरे प्यारे! देखो जालवी ऋषि एक समय महर्षि आस्काचार्य के द्वार पर विद्यमान थे। तो महर्षि आस्काचार्य और देखो जालवी ऋषि दोनों विद्यमान थे। महर्षि जालवी जी ने यह प्रश्न किया कि महाराज यह आत्मा मानों देखो वृत्त कहलाता है और यह मानव ब्रह्मणा व्रतम देवत-प्रवाहः। मेरे प्यारे! देखो ऋषि ने ऋषि से प्रश्न किया क्या महाराज ये जो अक्षय क्षीर सागर में रहने वाला विष्णु है तो उस समय आस्काचार्य ने उत्तर देते हुए कहां क्या यह आत्मा ब्रह्मणं ब्रहे कहते हैं कि अक्षय क्षीर सागर में विष्णु वास कर रहा है और वह अक्षय क्षीर सागर में जब वास करता है तो वही विष्णु है जो कल्याण कारक है। मानों देखो वह अप्रतम नारद अपनी वीणा को लिए हुए और गन्धर्व अपने में गान गाता हुआ बेटा अपने में मौन हो जाता है और लक्ष्मी चरणों में ओत-प्रोत हो जाती है। तो विचार आता रहता है कि वह

देखो वह जिससे पार-लौकिक आध्यात्मिकवाद में जब मानव प्रवेश करता है तो वह बेटा देखो उसमे रत्त हो जाता है। मेरे प्यारे देखो विष्णु राजा वह कहलाता है जो चार भुजो वाला होता है और चार भुजों वाले को विष्णु कहां जाता है।

भगवान् राम द्वारा विष्णु की विवेचना

मेरे प्यारे देखो मुझे स्मरण आता रहता है एक समय बेटा त्रेता के काल में मानों देखो भगवान् राम महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज के द्वारा बेटा अध्ययन कर रहे थे। अध्ययन करते एक समय प्रातः-कालीन बेटा देखो राम और वृत्तिका ब्रह्मचारी दोनों विद्यमान थे और दोनों ने कहां प्रभु! हमें कोई उपदेश दीजिए जिससे हम मानों कुछ अध्ययन कर सके। तो महर्षि वंशिष्ठ मुनि महाराज ने प्रातः-कालीन बेटा उन्होंने एक मन्त्र का उद्गीत गाया और वेद मन्त्र में यह अमृतम विष्णु आत्माम भूतम ब्रह्मा राजन नमम् ब्रव्हे कृतम देवों विष्णु लोकाम पंचनम ब्रव्हे व्रताः ऐसा वेद-मन्त्र का बेटा न्यौदा में से उन्होंने उद्गीत गाया और उद्गीत गा करके उन्होंने कहां जाओ इस वेद मन्त्र को लेकर के अध्ययन करो। मेरे प्यारे देखो वह अध्ययन करने लगे और वह अपने में दोनों अध्ययन करने लगे कहीं विष्णु राजा का वाची बन जाता है कहीं वही वेद-मन्त्र बेटा देखो वह अपने में ही मानों देखो परमात्मा का गुण गाता है कहीं वही वेद-मन्त्र बेटा देखो लोक-लोकान्तरों में विष्णु की मानों समावेषता उन्हें दृष्टिपात आने लगी। मेरे प्यारे! देखो दोनों अपने में अध्ययन करते रहे, ब्रह्मचारी थे, ब्रह्म का चिन्तन करने वाले थे। मेरे प्यारे देखो उन्होंने प्रातःकाल से सायंकाल हो गया परन्तु अपने में कोई निपटारा नही कर सके।

जब अपने में निपटारा नहीं कर सके तो मेरे प्यारे! देखो वह सायंकाल को रात्रि का जब प्रहर प्रथम पड़ा मानों चरण आया तो उन्होंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से मानों विष्णु के सम्बन्ध में जानना चाहा। तो मेरे प्यारे देखो दोनों ने कहा हे प्रभु! अमृतम् वह अपने में ध्यानावस्थित थे। मेरे प्यारे उन्होंने वेदमन्त्र का उद्गीत गाया और

जाता है जिस हृदय का मिलान योगीजन परमपिता-परमात्मा से किया करते हैं मानों उसी में यह रत्त हो जाता है। तो मेरे प्यारे देखो हृदय-स्थली में जब प्रवेश होता है तो नाना प्रकार के हृदयों का गम-स्वामी बन जाता है उसके पश्चात जब यह प्राणों की धुक-धुकी लगाता हुआ जब यह पंच चक्र में जाता है तो उदगीत गाना शान्त हो जाता है परन्तु देखो वहां संसार में कंठित हो जाता है और अपने में अपनेपन को भासने लगता है।

त्रिवेणी का स्नान

तो मुनिवरों! देखो उसके जब यह मानों देखो स्वाधिष्ट और व्रेत चक्र में जब प्रवेश करता है वहां से आगे बेटा देखो यह त्रिवेणी का स्नान करता है। त्रिवेणी उसे कहा जाता है यौगिक परिभाषा में जहां इंगला, पिंगला, सुषुम्नां तीनों नाड़ियों का मिलान होता है और तीनो नाड़ी मानों देखो उसमे स्नान क्या मानों उसमें अपना स्वर संगम मिलाता हुआ और उसी में रत्त हो करके बेटा स्नान की कृतियों में रत्त हो जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो मुझे स्मरण आता रहता है जब आचार्यों की वार्ताए मुझे स्मरण आने लगती हैं तो आचार्यों ने बेटा इसमे अपना-अपना मन्तव्य दिया है और मन्तव्य देते हुए कहां है कि त्रिवेणी कहते हैं इगला, पिगला, सुषुम्ना यह तीन प्रकार की मानों देखो नाड़ियां कहलाती हैं। देखो इंगला, पिंगला, सुषुम्ना का जहां मिलान होता है उसको त्रिवेणी कहते है और अगले स्थान में बेटा देखो त्रिजटा आती है जहाँ तीनो नाड़ियां मिल करके बेटा देखो वह त्रि देखो त्रिजटा में अप्रतम मानों उसमें प्रवेश करते हुए यह तीनों नाड़ियों का एक स्वर बन जाता है और वहां से चल करके बेटा देखो यह ब्रह्मरंध में प्रवेश हो जाता है जहाँ जितना भी परमात्मा का ब्रह्माण्ड है वह योगी मानों देखो बेटा उसे अपने में साक्षात्कार दृष्टिपात करने लगता है। तो बेटा देखो उस आत्मा का नाम विष्णु है जब इस प्रकार का योगेश्वर बन जाता है तो बेटा लक्ष्मी उसके चरणों में ओत-प्रोत हो जाती है और मन अपनी चंचल रूपी वीणा को ले करके संगत आ जाता है और

गन्धर्व गान गाता हुआ मानों देखो वह यशोगान गाने लगता है। तो मेरे प्यारे! देखो वह अक्षय-क्षीर-सागर में जहां विवेक में प्रवेश करता हुआ बेटा यह अक्षय-क्षीर सागर में शेषनाग की शैय्या पर विद्यमान हो जाता है ऐसे यौगिक आत्मा का मेरे प्यारे देखो वह पांच फनो वाला जो शेष नाग है बेटा देखो उसको योगी नीचे दबा कर लेता है और दबा करके मानों उसको अपनी शैय्या बना लेता है। मेरे प्यारे देखो पांच फनों वाला शेष-नाग कौन है? मेरे प्यारे आचार्यों ने कहा समधन्म् ब्रह्मी कृपा। मेरे प्यारे देखो वह तीन प्रकार का जो मानों फनों वाला शेष नाग है वह मुनिवरों देखो **काम, क्रोध, लोभ, मोह इत्यादि यह पांच फनों वाला शेष नाग कहा जाता है।** तो मेरे प्यारे देखो जब यह शेष नाग की शैय्या पर विद्यमान होता है तो उस समय अमृतम ब्रह्मा यह लक्ष्मी जो संसार को लुभाने वाली है उस संसार को मानों अपने में रत्त कराने वाली है। तो मुगमः ब्रह्मे यह उसकी आत्म ब्रह्मा यह लक्ष्मी चरणों में ओत-प्रोत हो जाती है।

यौगिक-पार-लौकिक-परिभाषाएँ

मेरे प्यारे देखो यह हमारे यहां आत्मा का नाम विष्णु माना गया है। विष्णु के वैदिक-साहित्य में बहुत से पर्यायवाची शब्द हैं। बेटा! हमारे यहां दो प्रकार की परिभाषाएं मानी जाती हैं। एक मानों यौगिक है एक पारलौकिक है। लौकिक उसे कहा जाता है जहां शब्दों को सजातीय बनाया जाता है और पारलौकिक उसे कहा जाता है जब अलंकार को ले करके बेटा आत्मा और परमात्मा से जिसका मिलन होता है मानों देखो उसको हमारे यहां अमृतम देखो पारलौकिक कहा जाता है। तो आओ मेरे प्यारे आज का हमारा वेद-मन्त्र अपने में उदगीत गाता हुआ कहता है विष्णु ब्रह्मा, ब्रह्मा आत्माम यह आत्मा का नाम विष्णु है और विष्णु ही बेटा देखो हमारा कल्याणकारक है। जहां परमात्मा का नाम विष्णु है जहां विष्णु नाम आत्मा का है जहां विष्णु नाम अक्षय-क्षीर-सागर में रहता है वहीं बेटा देखो विष्णु नाम राजा का है। उस राजा का नाम विष्णु है जो बेटा अपनी प्रजा को आनन्दित

मानों अपने में क्रियाकलाप ऊर्ध्वा में गमन करता है। वह क्रियाकलापी देखो राजा ही अपने राष्ट्र को ऊँचा बनाता हुआ विष्णु रूप बन जाता है। इसी प्रकार बेटा देखो अमृतम प्रवहे जैसे परमात्मा इस संसार का पालन करने वाला है ऐसे ही राजा अपने राष्ट्र का पालन करने वाला है और वह पालना के मूल में जब ही रहता है जब कि स्वयं राजा अपनी इन्द्रियों पर जय करने वाला होता है। इन्द्रियों पर जो संयमी है वही पुरूष बेटा देखो अपने को अपनेपन में गमन कराता रहता है अपने में धारयामी बनाता रहता है जिससे बेटा देखो विष्णु की संज्ञा उसे प्रदान की जाती है और राजा का नाम विष्णु है क्योंकि प्रत्येक इन्द्रियों में देखो वह अपने में ही मानों देखो रजतव में विद्यमान होता है। मेरे प्यारे! देखो जहां विष्णु नाम देखो यहां राजा का है वहीं विष्णु नाम मेरे प्यारे! देखो ब्रह्म सुर्य को कहा जाता है। सुर्य का नाम विष्णु है क्योकि वह पालना करने वाला है प्रातः काल में जब उदय होता है तो यह नाना प्रकार की किरणों को ले करके उदय होता है। मानों देखो एक उषा नाम की किरण है एक कान्ता नाम की किरण कहलाती है मानों देखो एक किरण हमारे यहां उषाजंलि कहलाती है जो अहिल्या के रूप में विद्यमान होती है। तो मेरे प्यारे यह नाना प्रकार की किरणों वाला जो मानों देखो यह सूर्य हमें प्रकाश देता है और नाना प्रकार की उर्ज्वा देता है उस उर्ज्वा से पालन कर रहा है। तो जहां भी पालना के मूल में आता है उसी का नाम विष्णु के रूप में बेटा वर्णन किया गया है। हे विष्णु! तू कल्याण करने वाला है। हे विष्णु! हम तेरी उपासना करते रहें। तो आओ मेरे प्यारे! देखो मैं विष्णु की प्रत्येक अमृतम ब्रह्मा देखो उसकी विशेष विवेचना देने नहीं आया हूँ। विचार-विनिमय केवल यह कि विष्णु ही मानों देखो हमारी पालना के मूल में विद्यमान रहता है। आज जब हम उसकी महिमा को अपने में धारण करते हैं तो अपने में ही मानों अपनेपन का हमें भान होने लगता है। तो विचार आता है कि विष्णु नाम बेटा जहां हमारे यहां पर्यायवाची शब्दों में दो प्रकार की परिभाषाओं में निहित रहता है। एक वह जो देखो वास्तविक साहित्य का जिससे निर्माण होता है और एक मानों

और उसकी महिमा को जानते रहें। बेटा! जो परमात्मा हमारे अन्तः-करण में विद्यमान है और जहां भी पालना का मूलक है वही मानों विष्णु को प्रसिद्ध किया गया है विष्णु की विवेचना की जाती है। वहीं विष्णु हमें दृष्टिपात होता है चाहे वह सूर्य के रूप में हो, चाहे वह आत्मा के रूप में हो, चाहे वह माता के रूप में हो। बेटा! देखो उसको मैं उसी प्रकार दृष्टिपात करूंगा जैसा हमारा वेद-मन्त्र कहता है।

आओ मेरे प्यारे! आज का विचार-विनिमय क्या हम परमपिता-परमात्मा की महिमा का गुणगान गाते हुए विष्णु रूप में हम परमात्मा को दृष्टिपात करते रहें। यह है बेटा आज का वाक् अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हें बेटा देखो राम और वृत्तिका ब्रह्मचारी मानों जब दोनों अपने गुरू से प्रश्न करें वह उसका उत्तर हम कल दें सकेंगे। आज का वाक् समाप्त अब वेदो का पठन-पाठन होगा। आज के वाक् उच्चारण करने का हमारा अभिप्राय क्या क्या बेटा! देखो **यौगिक आत्मा का नाम विष्णु है, पालना करने वाली माता का नाम विष्णु है, परमात्मा का नाम विष्णु है।** तो हम विष्णु की याचना करते हुए इस संसार-सागर से पार होने का प्रयास करें। तो यह है बेटा आज का वाक् कल समय मिलेगा तो मैं तुम्हे शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा अब वेदों का पठन पाठन होगा।

ओ३म् देवा आभ्याम् रथम्म वाचन्नमः।
ओ३म् तनुः प्रजाम् आपा रेवाः।
ओ३म् यशश्चां वायु शतः मन्प्रणहम् आपाः।
अच्छा भगवन्! आज्ञा।

दिनॉक : 20-जून-1992
समय : रात्रि 8 बजे।
स्थानः आर्य समाज इन्द्री, करनाल, हरयाणा

❐❐

उद्गीत गाकर ये कहां मातृम ब्रह्मे अमृतम हे प्रभु इसको हम नहीं जान सके हैं। तो मेरे प्यारे! देखो महात्मा वशिष्ठ मुनि महाराज ने कहां विराजो। वे दोनों विराजमान हो गये। उन्होंने कहां तुमने क्या जाना हैं विष्णु के सम्बन्धों में? तो भगवान् राम उपस्थित हुए दोनों ब्रह्मचारी उपस्थित हुए उन्होंने कहा प्रभु हम विष्णु के शब्द में ये जाने हैं क्या विष्णु लोक-लोकन्तरों को कहते हैं। जो लोक-लोकान्तर एक दूसरे में एक दूसरे का पालन कर रहा है जैसे सूर्य के अन्तर्गत नाना पृथ्वियाँ देखो अपने में गमन करती हैं और वह उसी को लेकर अपने में पालना में मानों सहवर्तम मानों वह अपने में देखो सहपृथ्वियों का पालन कर रहा है और वह पालक है मानों देखो जो पृथ्वी किसी लोक का पालक है। इसी प्रकार सूर्य मानों देखो बृहस्पति का पालक है और बृहस्पति आरूणी का पालक है और आरुणी मानों देखो ध्रुव आरुणी देखो अमृतम आरुणी देखो ध्रुव आरुणी का पालक है और मानो देखो ध्रुव देखो मूल नक्षत्रों का पालक अम्ब्रहे कहा गया है इसी प्रकार भगवन् देखो एक दूसरे में लोक समावेश होते हुए मुझे दृष्टिपात आ रहे हैं और वह एक दूसरे का पालक है। परन्तु जहाँ पालना का प्रसंग आता है वही भगवन् देखो ब्रह्मणे व्रतप प्रवाहा असुति दिव्याः मानों मुझे देखो वहीं विष्णु का शब्द सिद्व होता है। हे प्रभु! एक दूसरे के पालक का नाम वैदिक-साहित्य में विष्णु कहा जाता है सिद्ध हे प्रभु! हम तो ये जान पाये हैं परन्तु देखो पुनः वशिष्ट ने कहा क्या तुमने और क्या जाना है? उन्होंने कहां कहीं प्रभु! हम राजा को देखो विष्णु शब्द में दृष्टिपात किया है और वह राजा विष्णु जो चार भुजों वाला चार प्रकार की नियमावलियों का जो निर्माण करने वाला है उस राजा का नाम विष्णु है और मानम ब्रह्मा कृतो मानों देखो विष्णु जो पालक है और वह चारों भुजो वाला है। चार प्रकार के देखो भुज नाम नियमों को कहा गया है और वेद-मन्त्र कहता है विष्णु ब्रहण ब्रह्मा अतुमजन्म ब्रही कृतम देवाः अस्सुतम थम नाम भूतम ब्रह्मा विष्णु नमम ब्रह्मा कलम ब्रहे क्रतम हे राम! संगम ब्रव्हे क्रतम देवत्वाम् वेदमन्त्र की विवेचना करते हुए दोनों ब्रह्मचारियों ने कहां प्रभु यह राजा का वाचक शब्द है। राजा के सबसे

प्रथम जब राजा अपने राष्ट्र को ऊंचा बनाने के लिए नियम बनाता है तो सबसे प्रथम वह पदम का निर्माण करता है उसके पश्चात गदा का, उसके पश्चात वह चक्र का और शंख का मानों देखो वह चार प्रकार के नियमों का निर्माण करता है। सबसे प्रथम मानों देखो वह जो अमृतम जो नव गृहा वृति कहलाते हैं उसको पदम कहते हैं वह सदाचार का प्रतीक है और भगवन् देखो गदा नाम मानों देखो वह प्रहार का प्रतीक है और देखो वह जो ध्वनि है अमृतम देखो चक्र है वह संस्कृति का प्रतीक कहा गया है और जो मानों देखो जो ध्वनि है वह देवन का प्रतीक माना गया है। हे प्रभु! मेरे विचार में तो यह आता है जिस राजा के राष्ट्र में मानों पदम होता है पदम कहते हैं, चरित्र को जिस राजा के राष्ट्र में चरित्र होता है मानवीयता होती है वह राजा ऊँचा कहलाता है। वह राजा देखो मानों अपने में पदम धारी है और वह परमात्मा भूतम ब्रह्मा देवत्वाम एक कन्या राष्ट्र के छोर से एक छोर से दूसरे छोर पे चली जाए परन्तु देखो उसे पुत्री, माता की दृष्टि से पान करने वाला यह समाज हो। समाज का इतना ऊर्ध्वा में देखो निर्माण होना चाहिए और अग्नम ब्रह्मा ब्रव्हे व्रतम जैसे मानों देखो पदम अवृति अन्तरिक्ष को कहा जाता है और देखो उसमें जो भी क्रियाकलाप हो रहा है वह प्रत्येक प्राणी के लिए एक तुल्य हो रहा है इसी प्रकार राजा के राष्ट्र में एक सा नियम होना चाहिए। राजा और प्रजा मानों में किसी प्रकार को अन्तर्द्वन्द नही होना चाहिए। यदि राजा मानों दूषित हो गया है तो प्रजा उसे देखो पदम के आधार पर दण्डित करने वाली हो और प्रजा दूषित हो गई है तो राजा अपने पदम को ले करके उसको दण्ड देने के लिए तत्पर हो तो मानों देखो उसका नाम पदम है और द्वितीयाम ब्रह्मा कृति मानों देखो द्वितीय उस राजा पर गदा होनी चाहिए। गदा कहते है क्षत्रिय हों और वह मानों देखो वह अपने में किसी प्रकार का दूषितपना न हो, न्यायक हो अपने में ज्ञान का प्रतीक ज्ञान को भी गदा अमृत कहते हैं। मानों देखो इस प्रकार राजा के राष्ट्र में तृतीय जो नियम है वह चक्र होना चाहिए। अपनी संस्कृति का प्रसार होना चाहिए। जिस संस्कृति को लेकर के राजा अपने राष्ट्र

को ऊंचा बना सके अपने ऊंचे राष्ट्र को अपनाता रहे और उसमें सदाचार की शिक्षा दे करके और चक्र को ले करके अपनी संस्कृति इतनी ऊर्ध्वा में गमन करने वाली हो। मेरे प्यारे! देखो तृतीय वेद का प्रतीक वेद का गान गाने वाला ब्राह्मणत्व होना चाहिए, बुद्धिमान होना चाहिए। वह राजा के राष्ट्र में वेदों का गान गाने वाला जैसे जटा पाठ, घन पाठ, माला पाठ, विसर्ग पाठ, उदात्त् और अनुदात्त में गान गाने वाला हो तो मानों देखो इस प्रकार का जो गान गाने वाला राजा के राष्ट्र में ब्राह्मण है तो राजा का राष्ट्र ऊंचा बनेगा। ध्वनि भी पवित्र हो। वाणी के ऊपर देखो हमारा आधिपत्य होना चाहिए। तो बेटा! आज मैं विशेष चर्चा न देता हुआ केवल विचार विनियम यह कि हम परमपिता-परमात्मा की महिमा का गुणगान गाते बेटा! देखो विष्णु के रूप में अपने को दृष्टिपात करते हुए।

तो महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज ने कहा हे ब्रह्मचारियों! तुम्हारा मन्तव्य बहुत ऊंचा है मानों देखो तुमने जो विष्णु की विवेचनाएँ जानी है वह बड़ी विचित्र हैं परन्तु देखो यह अमृतम ब्रह्मा व्रती देवा यही विश्णु की विवेचना मानी जाती है। परन्तु भगवान राम ने कहां प्रभु! और भी शेष है जिसका आपको हमें निर्णय देना है क्योंकि हम अपने में मानों जान नहीं सके हैं। कल आप से हम प्रश्न करेगे उसका उत्तर आपको देना होगा। वशिष्ठ ने बेटा! यह स्वीकार कर लिया। मेरे प्यारे! उन्होंने कहां जाओ तुम विश्राम करों और अब यह तुम्हारा अध्याय समाप्त हुआ कल इसके ऊपर विचार-विनियम करेंगें।

तो बेटा! आज का हमारा विचार क्या मेरे प्यारे! देखो विष्णु की इतनी विस्तृत विवेचना है मैं इन्ही शब्दों की व्याख्या तुम्हें बेटा परिचय रूप में दे सका हूँ। समय मिलेगा तो बेटा शेष चर्चाऐं कल प्रगट करेंगें। आज का वाक् उच्चारण करने का हमारा अभिप्रायः क्या है क्या वह परमपिता-परमात्मा विष्णु है पालन करने वाला वह नियामक है निर्माण करने वाला है और वही मानों देखो ज्ञान और विज्ञान में रत्त रहने वाला है। हम उस परमपिता-परमात्मा की महिमा का सदैव गुणगान गाते रहें

रूपी वज्र को ले करके मानों देखो वत्रासुर का हनन किया उससे धीमी-धीमी वृष्टि प्रारम्भ हो गई और धीमी वृष्टि प्रारम्भ होकर के मुनिवरो देखो संसार में सुखद हो गया। परिणाम क्या इस अलंकार उच्चारण करने का क्या मुनिवरो देखो इन्द्र नाम यहां मुनिवरो देखो न राजा है, न परमात्मा है, **इन्द्र नाम यहां विद्युत को कहा गया है और इन्द्र नाम देखो वायु को भी कहा गया है** और शचि नाम मुनिवरो देखो विद्युत के रूप में रहने वाली देखो शचि है जो मुनिवरो देखो वायु अपने स्वामी को आज्ञा देती है। इन्द्र मानों देखो उसे देखो वायु रूपी इन्द्र उसे छिन्न-भिन्न कर देता है वत्रासुर से वृष्टि प्रारम्भ, वत्रासुर हमारे यहां मेघ-मण्डलों को कहा जाता है। तो विचार आता रहता है बेटा हमारे यहां वैदिक-साहित्य में नाना प्रकार की विवेचना और चर्चाऐं आती रहती हैं। विचार आता रहता है कि इन्द्रो भवन ब्रह्मा हे इन्द्र तू मानों देखो शचि की आज्ञा का पालन कर विद्युत जब अपने में धर्मग ब्रहे अस्तुति देवत्वाम जब अपने में धारयामि बनती है तो इन्द्र मुनिवरो देखो उसको अपने में धारण करता हुआ और मुनिवरो देखो वह वत्रासुर का वध करता है प्राण रूपी वज्र को लेकर के इन्द्र मुनिवरो देखो इस वायु को अमृतम और मेघों को नष्ट कर देता है। तो विचार आता रहता है बेटा जब इस प्रकार वेद के ऋषि ने अपनी वार्ता प्रगट की तो उस समय सम्भवा ब्रह्मणे लोकाम वाचस्सुतम देवा।

प्रतीचीदिग्

मेरे पुत्रो! देखो इसी प्रकार जब इन्द्र ब्रह्मे और तृतीय कला का नाम हमारे यहां प्रतीचीदिग् कहा जाता है। **प्रतीचीदिग् में देखो इन्द्र रहता है जो अन्न का स्वामी कहलाता है, वह वरूण कहलाता है।** जितना भी वृष्टि का प्रारम्भ होता है वह मानों देखो यह अमृतम ब्रह्मा वह वरूण कहलाता है। हमारे यहां वरूण नाम परमपिता-परमात्मा का है। वेद में मन्त्र आता है वर्णनम् ब्रह्मा वर्णनम् प्रवाह लोकाम हे मानव तेरा वही परमपिता-परमात्मा वरणीय है, तू उस को अपना वरणीय स्वीकार कर और उसे वरने वाला बन क्योंकि जब तू उसे वर लेता है तो वह मुनिवरो देखो वह परमपिता-परमात्मा उसी को प्राप्त हो जाता

।। ओ३म् ।।

षोडश-कला

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भांति कुछ मनोहर वेद-मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। यह भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा आज हमने पूर्व से जिन वेद-मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद-वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद-वाणी में उस मेरे देव की महिमा का गुण-गान गया जाता है जो सृष्टि के कण-कण में व्याप्त है।

मैं तुम्हें सत्यकाम की चर्चा कर रहा था। उनमें से, गऊगों में से एक वृख कहता है, एक बैल कहता है हे ब्रह्मचारी सत्यकाम! हम मानों देखो एक सहस्र हो गये हैं और हमें गुरू के आश्रम को अब गमन करना चाहिए। मेरे प्यारे देखो सत्यकाम ने कहा बहुत प्रियतम परन्तु सत्यकाम ने कहा कि मैं यहां से जब अब गऊओं को, तुम्हें यहां से अवृत करूंगा जब मुझे कुछ ज्ञान हो जाए, क्या यह मैं किस प्रकार करूँ? तो उस समय वृख ने कहाँ हे सत्यकाम मैं तुम्हें चार कलाओं का ज्ञान करा देता हूँ क्योंकि परमपिता-परमात्मा की यह षोडश-कला कहलाती हैं और षोडश-कलाओं में चार कलाओं का ज्ञान मैं करा देता हूँ। उन्होंने कहा बहुत प्रिय। तो उन्होंने कहाँ हे सत्यकाम सबसे प्रथम मानों देखो प्राचीदिग् और द्वितीय कला का नाम दक्षिणीदिग् और तृतीय कला का नाम मानों प्रतीचीदिग् कहलाता है और चतुर्थ कला का नाम उदीची कहलाता है और मुनिवरो देखो मंगलम ब्रह्मे यह चार कलाओं का ज्ञान मैं तुम्हें करा देता हूँ। जब तुम मानों देखो परमपिता-परमात्मा को जानने का तुम्हारा मन-मस्तिष्क

एकाग्र हो जाए तो परमात्मा मानों देखो प्राचीदिग् में तुम तेज को स्वीकार करो और दक्षिणीदिग् में वह परमपिता-परमात्मा हमारा इन्द्र बन करके रहता है और जब तुम देखो प्रतीचीदिग् में जाओगे तो वरूण बन करके रहता है और उदीची में मानों सोम बन करके रहता है। तो ये परमात्मा के गोमिक नामों में नाना प्रकार का मानों ज्ञान-विज्ञान इसमें विद्यमान रहता है। हे ब्रह्मचारी यह चतुष कला कहलाती है।

प्राचीदिग्

मानो सबसे प्रथम प्राची है। प्राची में अग्नि अपना प्रकाश देती है। सूर्य उदय होता है और वह प्रकाश को ले करके मानों देखो अन्धकार को नष्ट करता चला जाता है। **तो मानव के जीवन में अंधकार नहीं होना चाहिए।**

दक्षिणीदिग्

जब वह मानों दक्षिणायन में प्रवेश करता है तो वहाँ मानों देखो इन्द्र हमारे यहां परमपिता-परमात्मा को कहते हैं। इन्द्र के यू तो वैदिक-साहित्य में नाना प्रकार के पर्यायवाची शब्द माने गये हैं परन्तु यहां इन्द्र नाम बेटा देखो दक्षिणायन में इन्द्र कहते हैं सोम, इन्द्र कहते हैं जो विद्युत की धाराएं है वह विद्युत की धाराएं मेरे प्यारे देखो अपृतों में वह हिमालय अमृतियों से देखो अपने में मिलान करती हैं। उससे मानों देखो नाना प्रकार का सुखद और वृष्टि का प्रारम्भ होता है मानों उसी को इन्द्र कहते हैं। इन्द्र विद्युत का स्वामी है, विद्युती कहलाता है। तो मेरे प्यारे देखो अमृतम देखो वर्णस्सुतम वह इन्द्र हमारा देवता। हमारे यहां इन्द्र के वैदिक-साहित्य में नाना पर्यायवाची शब्द माने गये हैं। इन्द्र नाम जहां परमपिता जहां मानों देखो यह दक्षिणायन का नाम इन्द्र है वहां इन्द्र नाम परमपिता का है। इन्द्र कहते हैं जो मानों इस संसार का स्वामीत्व है, इन्द्र कहते है जो मानों प्रकृति का नेतृत्व करने वाला है उस परमपिता-परमात्मा का नाम इन्द्र है। इन्द्र नाम राजा को भी कहते हैं जो राजा जितेन्द्रीय होता है और जितेन्द्रीय बन करके मानों देखो राष्ट्र को ऊंचा बनाता है और अपनी मानों ब्रह्म ब्रहे, वह इन्द्र

उपाधियों को प्राप्त करता रहता है। मानों देखो हमारे यहां राजा का नाम भी इन्द्र है। तुमने यह श्रवण किया होगा कि देखो सतोयुग और त्रेता के मानों काल की यह बहुत सी वार्ताए हैं, इन्द्र नाम राजा का है जो इन्द्र उपाधियों में निहित रहने वाला है। एक मानव जब तपस्वी बनता है एक सौ एक अश्वमेध याग कर लेता है वह मानव इन्द्र की उपाधि को प्राप्त हो जाता है। तो मेरे प्यारे एक सौ एक अश्वमेध याग उसे कहते हैं कि जिसका संसार में कोई शत्रु न रहे और वह इन्द्र बन करके बेटा जब वह याग करता है तो याज्ञिक मानों एक सौ एक याग करने की इस प्रकार वह इन्द्र की उपाधियों को प्राप्त होता रहा है। आचार्यों ने, ऋषि-मुनियों ने उसे इन्द्र की उपाधियों से बेटा अलंकृत किया है वह इन्द्र कहलाता है। तो हमारे यहां इन्द्र नाम परमपिता-परमात्मा का है जो प्रकृति का नेतृत्व करने वाला है और इन्द्र बेटा नाम आत्मा का जो शरीर में वास करने वाला इन्द्र है। इन्द्र उसे कहते हैं जो जितेन्द्रीय रहता है, मानों प्रत्येक इन्द्रियों के विषयो को जानने वाले को इन्द्र कहा जाता है। इन्द्र नाम राजा का है जो एक सो एक अश्वमेध-याग करता हुआ और वह इन्द्र की उपाधियों से अलंकृत किया जाता है उसे इन्द्र कहा जाता है। इन्द्र नाम बेटा! जो अपने में स्वामित्व की आभा में रत्त रहने वाला है। तो विचार आता रहता है हे इन्द्र! तू हमारा कल्याण-कारक है। तो जो इन्द्रो भव प्रमाणम ब्रह्मे वृतम वेद की आख्यायिका कहती है कि इन्द्र ही हमारा जीवन है और इन्द्र के द्वारा ही अपने जीवन को ऊंचा बना सकते हैं। तो मेरे प्यारे देखो **दक्षिण में इन्द्र रहता है** वह इन्द्रो समम ब्रह्मा देखो वही इन्द्र मानों विद्युत के रूप में रहता है। यहाँ राजा को इन्द्र कहते हैं वहां इन्द्र नाम बेटा देखो विद्युत को कहा जाता है।

हमारे एक अलंकार वैदिक-साहित्य में एक अलंकारिक चर्चाए आती हैं। क्या एक समय बेटा इन्द्र अपने स्थान पर विद्यमान हैं। वत्रासुर ने मुनिवरो देखो जब आक्रमण किया तो अ अमृतम उनकी पत्नी शचि ने यह कहा हे इन्द्र मानों देखो इस वत्रासुर का आक्रमण हो गया है अमृतम देखो वत्रासुर का वध किया जाए। तो इन्द्र बेटा अपने प्राण

मानों उत्तरायण जीवन बन गया। उत्तरायण का अभिप्राय बेटा देखो लोक में भी कहा गया है। जब यह सूर्य की दो प्रकार की कलाएं होती हैं एक उत्तरायण होता है एक दक्षिणायन होता है परन्तु मानव का जीवन जहाँ आता है वहां उत्तरायण का अभिप्रायः है कि मानव ज्ञानी और साधक बन जाए। मेरे प्यारे **ज्ञान का नाम उत्तरायण कहलाता है।** उनका जीवन जब उत्तरायण हो गया तो एक समय वह ब्रह्म की वार्ता प्रगट करने लगे। जब ब्रह्म की चर्चा करने लगे तो महारानी द्रोपदी ने यह कहा हे प्रभु! हे पितामह! आप ब्रह्म की वार्ता आज प्रगट कर रहे हैं परन्तु उस समय तुम्हारा यह मन, तुम्हारा यह ब्रह्म-ज्ञान कहा गया था जब मेरा मानों देखो सतीत्व को हनन करने के लिए तुम्हारे पौत्रों ने मानों अपने क्रियाकलाप को बनाया था तुम वहां विद्यमान थे। तो उस समय भीष्म ने कहा हे देव पुत्री! मानों देखो मेरा अमृतम देखो वह अर्जुन के पीछे की अवृतियों ने देखो वह रक्त मेरा नष्ट कर दिया है जो मानों देखो वह जो मैनें दुर्योधन का पाप का अन्न ग्रहण किया था राष्ट्रीय अन्न और देखो अब तुम्हारे पवित्र अन्न से मेरा मन पवित्र हो गया है इसलिए मुझे ब्रह्म मेरा जीवन उत्तरायण बन गया है। तो मेरे प्यारे देखो हमारे यहां यह कहा गया कि **उत्तरायण में सोम रहता है और सोम को पान करने वाला ही ज्ञानी कहलाता है।** तो मेरे प्यारे देखो उत्तरायण में गमन करने वाला अपने में महानता को प्राप्त रहता है। जब पितामह भीष्म का जीवन बेटा देखो उत्तरायण में चला गया उस समय उन्होंने देखो वह सब जितना भी कुटुम्ब उनका था वह सब विद्यमान कराए और उन्होंने कहा आज मैं अपने शरीर को त्याग रहा हूँ क्योंकि मेरा जीवन उत्तरायण हो गया है। उत्तरायण का अभिप्राय यह है कि मैं अपने शरीर को स्वेच्छा से त्याग सँकू। तो बेटा देखो वह ज्ञानी बन करके ही कर सकता है या योगाभ्यासाम भूतम ब्रह्मे **अन्न का पवित्र होना ही मुनिवरो मानव के जीवन में एक महानता को जन्म देना है।** तो मुनिवरो देखो उन्होंने उत्तरायण जब जीवन बन गया उत्तरायण का अभिप्राय यह है कि उत्तरायण कहते हैं ज्ञान को और दक्षिणायण कहते है अन्धकार को,

है। तो विचार आता रहता है कि इन्द्र नाम हमारे यहां देखो वह सोम वणेम् ब्रह्मा वह उसको वरूण बनाना चाहिए तो वह वरूण कहलाता है। **हमारे यहां जल का नाम भी वरूण है वह सोम कहलाता है।** जब वैज्ञानिकजन इस संसार में विज्ञान के स्वरूप में प्रवेश करते हैं तो तरलत्व पदार्थ को जान करके ही मुनिवरो देखों तेजोमयी से मिलान करते है और तेजोमयी और तरलत्व को ले करके गुरूत्व का मिलान करके यह तीन प्रकार के परमाणुओं को ले करके विज्ञान अपने में वैज्ञानिकता को प्राप्त होता है। तो विचार आता रहता है कि वह वरूण कहलाता है वह हमारा वरणीय है। **परमपिता-परमात्मा को भी वरूण कहा गया है।** तो आओ मेरे प्यारे देखो हम उसे अपना वरणीय स्वीकार करें और वही वरण करने के योग्य है। तो बेटा देखो उसे हम अपना स्वामित्व और उसको वरूण बना करके हम परमपिता-परमात्मा की उपासना करने वाले बनें। तो विचार आता रहता है बेटा वर्णम ब्रह्मा वर्णो देवत्वाम अभयम ब्रह्मे वर्णस्सुतम् हे अमृतम, हे मानव तू उसको अपना वरणीय बना। तो बेटा देखो प्रतीचीदिग् में देखो वरूण रहने वाला है। तो प्रतीचीदिग् की उपासना करें। यह ध्रुवाम भव ब्रह्मे लोकाम।

उदीचीदिक्

मेरे पुत्रो! देखो चतुर्थ में सोम आता है। जब चतुर्थकला का वर्णन आता है तो उसमें सोम आता है। हमारे यहां **सोम नाम बेटा ज्ञान को कहा गया है, सोम नाम मुनिवरो देखो अपने में यौगिकवाद को कहा गया है।** सोम कहते हैं जो मानों पान करने वाला है। मेरे प्यारे देखो मेरी प्यारी माता के गर्भस्थल में जब शिशु विद्यमान होता है तो माता उस समय देखो कुछ औषधियों का सोम बना करके पान करती है और वह ज्ञान का व्यवधान करती है। मुनिवरो देखो अपने गर्भस्थल में रहने वाले शिशु को वो ज्ञानी बनाती है वह मानों उसी आभा में रमण करती है देखो बाल्य को गर्भ-स्थल में शिक्षा देना प्रारम्भ करती है उस शिक्षा का नाम सोम कहा गया है। औषधियों के रसों को लेकर के जो माताएं जानती हैं मानों वह देखो उसको सोम बना करके पान

करती हैं। सोम नाम बेटा जहां औषधियों के रस को कहा गया है सोम नाम बेटा देखो ज्ञान को कहा गया है। जब मेरी प्यारी माता देखो अपने बाल्य को गर्भ-स्थल में कहती है हे बालक! बुद्धोसी, शुद्धोसि, निरंजनसी मानों यह कहती हैं तू शुद्ध है, बुद्ध है, निरंजन है तू मानों देखो अखण्ड रहने वाली ज्योति एक आत्मा है तो मानों देखो अपने में महान है। जब इस प्रकार माता अपने शिशु को आत्मा की आत्मा से वार्ता प्रगट करती है तो बेटा वह बाल्य आत्मवेत्ता बन जाता है। मेरे प्यारे देखो माता मदालसा का जीवन जब मुझे स्मरण आने लगता है तो हृदय गद-गद हो जाता है। माता मदालसा के गर्भ में जब आत्मा का प्रवेश हुआ तो वह तीन शब्दों की विवचेना करती रहती और कहती कि हे आत्मा तू शुद्ध है, हे आत्मा तू निरंजन है किसी काल में तू नष्ट नहीं होती। आत्म ब्रह्मा वर्णस्सुतम आत्माम देह व्रतम तू बुद्धोसी, शुद्धोसी और निरंजनसी तू बुद्धिमान भी है मानों देखो तू अखण्ड रहने वाली अनुपम ज्योति है। इस प्रकार माता जब अपने में उपास्य देव आत्मा की उपासना करती हुई अपने में जानने लगती है तो माता के गर्भ-स्थल में जो शिशु है उन प्रेरणाओं को प्राप्त करता हुआ बेटा अपने में महानता को धारण करने लगता है। तो मेरे प्यारे देखो ध्रुवाम ध्रुवम ब्रह्मा व्रतम अस्सुतम देवा सोमाम् ब्रम्हे हे सोम तू पान करने वाली तू सोम का पान कर।

बेटा! सोम का कौन पान करता है। मुझे स्मरण आता रहता है जब मैं कागभुषण्ड जी के आश्रम में प्रवेश करता रहा हूँ तो बेटा वह वाक् मुझे स्मरण आते रहते हैं जो उन्होंने एक समय लोमश मुनि से यह कहा कि प्रभु! मैं सोम को पान करना चाहता हूँ। उन्होंने कहा तुम अनुष्ठान करो। तो बेटा देखो वह प्रातः-कालीन याग करते रहे और याग करके उनमें जो तरंगो का, तरंगे उत्पन्न होती उन पदार्थों में से जो अग्नि में पदार्थ, अग्नि में प्रदान किए जाते हैं वे तरंगे मानों उन तरंगो में जो ज्ञान-विज्ञान विद्यमान था उसको प्रायः वह जानते रहते। मेरे प्यारे देखो वह अपने में **कागभुषण्ड जी ने देखो बारह वर्ष का अनुष्ठान किया** और वह अनुष्ठान करके मुनिवरो देखो अपनी महानता

को प्राप्त हो गये। तो विचार आता रहता है बेटा देखो अपने में कितने विचित्रत्व को प्राप्त होते रहे। तो आओ मेरे प्यारे विचार आता रहता है कागभुषण्ड जी ने इस प्रकार के मानों देखो **पांच अनुष्ठान किए बारह-बारह वर्ष के** और अनुष्ठान से ही मुनिवरो वह महान ऋषि कहलाए। विचार आता रहता है **अनुष्ठान कहते हैं नियम बद्धता को याग करना और सुगन्ध को देना। मुनिवरो देखो अपने विचारो को वेदा अमृत का पान करते थे वह सोम कहलाता है। ज्ञान में रत्त रहना ही मुनिवरो देखो अनुष्ठान कहलाया गया है।** तो उस समय कागभुषण्ड जी अपने में महान कहलाए।

उत्तरायण

तो विचार आता रहता है बेटा देखो मैं उच्चारण कर रहा था क्या हे अमृतम ब्राह्मणे सोम को प्राप्त करना चाहिए। मेरे प्यारे देखो वह ध्रुवाम विष्णु ब्रह्मा सोमान ब्रह्मे उदीची देखो उदीची सोम ब्रह्मा अमृतम देवा उदीची में सोम रहने वाला है। **हम उत्तरायण अपने जीवन को बनाए।** बेटा देखो मैनें तुम्हें कई काल में वर्णन करते हुए कहा था जिस समय बेटा देखो महाभारत के काल में जब मुनिवरो देखो पितामह भीष्म, जब भीष्म जी मृत्यु की शैय्या पर विद्यमान हो गये तो उन्होंने यह कहा था कि जब तक मैं अपने जीवन को उत्तरायण नहीं बना लूँगा जब तक इस शरीर को नहीं त्यागूगां। मेरे प्यारे देखो पितामह भीष्म अपने में उत्तरायण बन गये। तो मुनिवरो देखो कौन द्रोपताम ब्रह्मा देखो द्रोपदी उसे अन्न का पान कराती रहती। मुझे बेटा स्मरण आता रहता है द्रोपदी अन्न का पान कराती रहती। वह गायत्री छंदो का पठन-पाठन करती हुई अन्न को तपा करके मेरे प्यारे वह स्वयं भीष्म जी को अन्न का ग्रहण कराती और ग्रहण कराते-कराते उनकी पवित्र बुद्धियो को अन्नदान भूतम ब्रह्मा अन्न से मन का निर्माण होता है और मन की तरंगे बेटा देखो वह आत्मा की भूज्जी कहलाती है। आत्मा में आत्मा से ही वह प्रेरणा आत्मा की आत्मा के प्रकाश में देखो मन अपने क्रियाकलापो में रत्त होता रहता है। तो बेटा देखो उनका मन एकाग्र हो गया और जब मन मुनिवरो देखो छः माह में उनका

अस्त्रों-शस्त्रों से युक्त हो करके जो विश्वामित्र मृत्यु दण्ड देने के लिए तत्पर थे वह अश्रुपात जाने लगे और मुनिवरो देखो विश्वामित्र महाराज वशिष्ठ के चरणों में ओतप्रोत हो गये और यह कहा हे प्रभु! अब मुझे क्षमा कीजिए। तो उस समय जब वह अश्रुपात हो गये, नम्रता आ गई चरणो की, चरणो की वन्दना में लग गये उस समय उन्होंने ब्रह्मर्षि कहाँ। ब्रह्मर्षि किस समय बनता है, क्या मेरे प्यारे परमात्मा, परमात्मा निरभिमानी है जब तक मानव में अभिमान रहेगा तब तक जीवन उसका प्रिय नहीं बनेगा। इसलिए उन्होंने यह निश्चय किया कि परमात्मा तो निरभिमानी है और जब तक निरभिमान नहीं आ जायेगा तब तक परमात्मा को प्राप्त नहीं हो सकेगा। मेरे प्यारे उन्होंने ब्रह्मर्षि कह करके सम्बोधित किया तो वह ब्रह्मर्षि बन गये। तो विचार आता रहा है बेटा देखो **नम्रता ही मानव का जीवन है और ध्रुवा में गमन करने वाला ही विष्णु कहलाता है,** वेद का आचार्य कहता है वह विष्णु है।

ऊर्ध्वाकला

मेरे पुत्रो! देखो ऊर्ध्वा बृहस्पति ब्रह्मा लोकम रचितम मानों देखो ऊर्ध्वा में बृहस्पति रहता है। बृहस्पति कहते हैं जो देवताओ का मानों देखो आचार्यत्व कहलाता है। आचार्यों का कौन गुरू है? जो बृहस्पति है। मेरे प्यारे देखो देवताओं का गुरू बृहस्पति कहलाता है बृहस्पति कहते जो आचार से मानों पवित्र होता है और वह ब्रह्मचारियों को आचार की शिक्षा दे करके और उनको महान बनाता है मृत्यु से पार कर देता है। मृत्यु से पार होना ही बेटा देखो मृत्युञ्जय बनना है और वही मुनिवरो देखो ब्रहस्पति कहलाता है। तो विचार आता रहता है बेटा यह कलाए कहलाती हैं इनको जानना है। देखो **नम्रता का आ जाना नम्रता में परणित होना और बुद्धिमत्ता है जो अपने को अपने में धारण करने वाला है।** तो आओ मेरे प्यारे मैं तुम्हें विशेष चर्चा न देता हुआ केवल यह कि मुनिवरो देखो हमें अपने जीवन को अपनी कलाओ से सुशोभित करना चाहिए। मेरे पुत्रो! देखो यह कला कहलाती हैं सबसे प्रथम मानों ध्रुवा में विष्णु गमन करता है। विष्णु कहते हैं

अज्ञानी को। तो मुनिवरो देखो जब उत्तरायण जीवन बन गया तो उन्होंने गायत्री छन्दो का पठन-पाठन करने के पश्चात अपने शरीर को त्याग दिया। तो विचार आता रहता है बेटा उसे उत्तरायण कहते हैं।

तो मुनिवरो देखो उस समय जाबाला पुत्र सत्यकाम ने देखो वृषभ से कहा धन्य है भगवन् मुझे तुमनें चारो कलाओं का ज्ञान कराया है। चार कलाओं का अभिप्रायः यह है क्या मुनिवरो देखो वह प्राचीदिग् में अग्नि रहता है और मुनिवरो देखो उदय दक्षिणायन में इन्द्र और मुनिवरो देखो वह तत प्रणी कृतम ब्रह्मा और वह मुनिवरो देखो प्रतीचीदिग् में सोम रहने वाला है अमृतम ब्रह्मा देखो वरूण रहता है और उत्तरायण में सोम रहता है। वह सोम ज्ञान को कहते हैं और मुनिवरो देखो प्रति अमृतम सोम कहते हैं अमृत को पान करने वाले को ज्ञानम भूतम ब्रह्मा। तो इस प्रकार बेटा जब ऋषि ने अपना वर्णन किया तो वर्णन करने के पश्चात् वह वृषभ शान्त हो गया और वृषभ ने कहा कि जाओं अग्नि कलाओं का ज्ञान तुम्हे सूर्य देवता कराऐगें।

ध्रुवा कला

तो मेरे प्यारे! देखो अगला जो दिवस आया। प्रातः कालीन जाबाला पुत्र सत्यकाम ने याग किया और याग करके वहां से जब गऊओं को ले करके प्रस्थान किया। तो मेरे प्यारे अगला जो दिवस, अगला जो सायंकाल हुआ, सायंकाल के समय बेटा उन्होंने पुनः याग किया और याग करने के पश्चात उनमें से एक मानों सूर्य देवता प्रगट हुए और यज्ञ के पश्चात् उन्होंने कहा हे जाबाला पुत्र! आओं मैं तुम्हें चार कलाओं का ज्ञान करा देता हूँ। उन्होंने बेटा देखो ध्रुवाम अमृतम ऊर्ध्वाम उन्होंने कहा कि देखो चन्द्र कला, सूर्य कला यह चार कला कहलाती हैं। सबसे प्रथम कला का नाम हमारें यहां देखो ध्रुवा कहलाता है। ध्रुवा कहते हैं जो विष्णु है, पालन करने वाला है ध्रुवा कहते हैं। जो मुनिवरो देखो ध्रुव में जो नम्र हो करके गमन करता है वहीं ध्रुवा में रहने वाला है। मेरे प्यारे उन्होंने कहा विष्णु ध्रुवा में रहता है इसलिए उदीचीदिग् सम ब्रह्मा वर्णस्सुते वृथम अब वण देखो वर्ण

सप प्रवाह लोकाम हे मानव तू ध्रुवा बन। मानों ध्रुवा में विष्णु रहता है और वह विष्णु हमारा कल्याण करने वाला वह ध्रुवा है। जब माता-पिता बनते हैं तो मानों वह ध्रुवा बिना माता पिता नहीं बनते। मेरे प्यारे आचार्य भी ध्रुवा में गमन करने वाला है। विचार आता रहता है ध्रुवा राजा है जो अपनी प्रजा का पालन करके नम्र हो करके पालन किया जाता है तो इसलिए ध्रुवा में रहने वाला मानव विष्णु कहलाता है। अब विष्णु अस्सुतम बन करके अपने जीवन को ऊर्ध्वा में गमन कराते रहें। तो आओ मेरे प्यारे देखो वेदाचार्यो ने इस प्रकार वर्णन करते हुए कहा क्या ध्रुवा में विष्णु है।

मुनिवरो देखो जो ध्रुवा में गमन करता है मुझे स्मरण आता रहता है क्या ध्रुवा कहते हैं जो निरभिमानी होता है। निरभिमानी को ही मुनिवरो देखो ध्रुवा कहते हैं। मुझे स्मरण आता रहता है साहित्य की चर्चाए हैं जब बेटा देखो एक समय महाराजा विश्वामित्र का और वशिष्ठ मुनि महाराज का दोनो का देखो इन्हीं वाक्यों पर देखो एक विवादग्रस्त उनका एक जीवन बन गया। मेरे प्यारे देखो करोड़ो गायत्रियों का जपन करने के पश्चात् महर्षि विश्वामित्र मेरे प्यारे देखो भयंकर वन में अनुष्ठान करते रहे। एक गऊ को अपने में वशीभूत करने के केवल मात्र से जब वह मुनिवरो देखो केवलम ब्रह्मा जब वह करोड़ो गायत्रियों का जाप करने के पश्चात जब पुनः बेटा देखो अपने अस्त्रों-शस्त्रों से युक्त हो करके वह महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज के द्वार पर आये और वशिष्ठ मुनि महाराज को यह उस समय एक निहित था जब तक वह किसी को ब्रह्मवेत्ता उपाधि नहीं प्रदान करते थे तब तक मानों देखो वह ब्रह्मा वह ब्रह्म उपाधि को प्राप्त नहीं होता था, उसको ब्रह्मर्षि नहीं कहा जाता। तो मुनिवरो देखों जब महाराजा विश्वामित्र जब अस्त्रों-शस्त्रों से युक्त हो करके और वशिष्ठ मुनि के आश्रम में पहुंचे तो उन्होंने कहा आईये राजर्षि जी। अब राजर्षि जी उच्चारण करते उसके मनों में एक अग्नि प्रदीप्त हो गई और यह कहा हे ब्रह्माण! तू अभिमानी है। उन्होंने क्रोध में आ करके उनके एक ब्रह्मचारी को मानों देखो मृत्यु दण्ड दे दिया। मृत्यु दण्ड दे करके चले

आये। तो ऐसा कहा जाता है क्या विश्वामित्र के सात-जन्मो का पुण्य मानों देखो उसी समय नष्ट हो गया। मेरे प्यारे देखो मुझे स्मरण है पुनः वह तपस्या के लिए चले गये और जब तपस्या के लिए चले गये तो पुनः गायत्री छन्दो में पुनः से मानों उसमें रमण करने लगे। ऐसा मानों देखो बारह वर्ष का और बारह क्या बारह अमृतम मानों चौबीस वर्षो का उन्होंने पुनः तप किया। **तप कहते हैं इन्द्रियो को संयम में करना और तप कहा जाता है तपम ब्रह्मा परमात्मा को एक-एक कण-कण में स्वीकार करना** और इन्द्रियों में मानों **इन्द्रियों को मृत्यु से पार करने का नाम तप कहा जाता है।** तो मेरे प्यारे देखो महात्मा विश्वामित्र ने जब इस प्रकार का तप किया तो उन्हें आह्वान होने लगा हे विश्वामित्र तुम्हारा तप पूर्ण हो गया तुम तपस्वयं ब्रह्मा। मेरे प्यारे देखो वहां से वह गमन करते हैं और अपनी राष्ट्रीय वृतियों में आये तो मानों उन्होंने अस्त्रों-शस्त्रों से युक्त हो करके पुनः जब वशिष्ठ आश्रम में पहुँचे तो बेटा देखो उन्होंने कहा आईये राजर्षि जी। राजर्षि जी उच्चारण करते पुनः अग्नि प्रदीप्त हो गई क्रोधाग्नि जागरूक हो गई। उन्होंने कहा इस ब्राह्मण को मृत्यु दण्ड दूँगा यह मानों देखो यह अभिमानी है। तो उस समय उनकी शान्त वाटिका में विद्यमान हो गये और विद्यमान होने के पश्चात् मेरे प्यारे देखो वह शान्त हो गये। चन्द्रमा अपनी सम्पन्न कलाओं से युक्त थे। चन्द्रमा मानों अपनी पूर्ण कलाओ से युक्त होते हुए उन्होंने अमृतम माता अरूणधति बोली कि हे प्रभु! यह चन्द्रमा अपनी कैसी सम्पूर्ण कलाओं से मानों देखो सुशोभित हो रहे हैं, कैसी कलाए हैं षोडश-कलाओ से युक्त हैं। उन्होंने कहा हे देवी! यह जो चन्द्रमा का जो प्रकाश है यह कोई प्रकाश नहीं है जितना प्रकाश महर्षि विश्वामित्र का है। उन्होंने कहा हे प्रभु! आप भी बड़े विचित्र हैं। आपके एक ब्रह्मचारी को मृत्यु दण्ड दे दिया और आप देखो आपको अशुद्ध वार्ता प्रगट करते रहते हैं उसके पश्चात भी आप प्रशंसा कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि हे देवी! मैं उनके गुणों की प्रशंसा कर रहा हूँ अवगुणों की प्रशंसा नहीं कर रहा हूँ। उनमें मानों जितना तप है, तप के पश्चात यदि उसमें नम्रता नहीं आती तो ब्रह्म का, ब्रह्म का ज्ञान उसे नहीं हो सकेगा तो मानों देखो जो वाटिका में शान्त

पूज्यपाद गुरुदेव का जन्मोत्सव

परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा से पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज, आदि गुरु ब्रह्मा जी के परम प्रिय शिष्य का 69वां जन्मोत्सव दिनाँक 13 सितम्बर से 15 सितम्बर 2011 तक गुरुदेव की कर्मभूमि एवम् निर्माणीत यज्ञोय स्थली लाक्षागृह बरनावा में सामवेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ के आयोजन द्वारा प्रति वर्ष की भाँति बड़े हर्षोल्लास के साथ गांधी धाम समिति (पंजी.) के द्वारा मनाया जा रहा है।

अतः आप सभी से नम्र निवेदन है कि योग निष्ठ गुरुदेव द्वारा पुनः से प्रज्वलित इस यज्ञ ज्योति को निरन्तर ऊर्ध्वा में ले जाने के लिये आप अपने परिवार, सगे-सम्बन्धी एवम् मित्रो सहित भाग लेकर आहुति प्रदान करें।

गाँधी धाम समिति (पंजी.)

जो पालन करने वाला है। **नम्रता से पालन किया जाता है** जैसे मैं इससे पूर्व काल में बेटा माता की चर्चा कर रहे थे। माता को विष्णु कहते हैं क्योंकि वह पालन करने वाली है, परमात्मा को विष्णु कहते हैं जो पालन करने वाला है, सूर्य को विष्णु कहते हैं जो सहस्त्रों किरणो से संसार को प्रकाश में रत्त करने वाला है और नम्रम ब्रह्मा देवतत्वाम वह नम्र है मानों सबको एकसा प्रकाश देता है इसी प्रकार ध्रुवा में विष्णु रहता है। हे विष्णु मानों तू नम्र है, तू अपने में, देखो **माता-पिता भी जब ही नम्र बनते है जब ही पालना में प्रवेश होता।** तो मेरे प्यारे देखो ध्रुवाम मम ब्रह्मणे ध्रुवा अस्सुतम देवम ब्रह्मा सोमन ब्रह्मे क्रमत। मेरे प्यारे! देखो ध्रुवा में विष्णु रहता है ऊर्ध्वा में बृहस्पति है। बृहस्पति कहते हैं जो बेटा ऊर्ध्वा में अपने जीवन को बनाता है, बुद्धिमान बनता है और जो मानव देखो विद्या का अध्ययन करता हुआ वह मुनिवरो देखो ध्रुवाम ब्रह्मण व्रतम देवा वह ध्रुवा में गमन करने वाला है तो वही तो मुनिवरो देखो संसार में कल्याण के मार्ग पर चलता है।

तो आओ मेरे प्यारे! विचार क्या मुनिवरो देखो मैनें छः-कलाओं का तुम्हें ज्ञान कराया है। छः-कलाओं में क्या है बेटा देखो प्राचीदिग्, दक्षिणीदिग् और प्रतीचीदिग् और उदीचीदिग् और ध्रुवाम ब्रह्मा देखो वह ध्रुवा में विष्णुदिग् और ऊर्ध्वा में बृहस्पति गमन करने वाला है। तो मेरे प्यारे **जब परमात्मा को हम देखो सर्वत्रता में दृष्टिपात करेगें तो हमारी साधना पूर्ण हो जायेगी।** साधक बन करके बेटा, परमात्मा को, निरभिमानी बन करके मुनिवरो देखो उसको हम प्राप्त कर सकते हैं। तो यह बेटा आज का वाक् अब मुझे समय मिलेगा तो तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट करूँगा। आज का विचार-विनिमय क्या कि हम परमपिता-परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा का गुण-गान गाते हुए मेरे प्यारे! देखो हम स्वयं अपने में इन्द्र बनें और स्वयं विष्णु बनें और मुनिवरो देखो बृहस्पति बन करके अपने जीवन को महानता मे ले जाएँ जिससे हमारा जीवन एक पवित्रता को धारण करता रहे। इसी प्रकार बेटा देखो छः-कलाओं का ज्ञान इसमें पूर्व काल में प्रगट

करेंगे।

आज का हमारा अभिप्राय यह कि **हम परमपिता-परमात्मा की महती और उसके ज्ञान और विज्ञान में रत्त हो जाएँ। प्रत्येक इन्द्रियों पर संयम करके उन्हें मृत्यु से पार ले जाएं।** इन्द्रियों को बिना मृत्यु के पार लिए बिना बेटा देखो मानव मृत्युञ्जय नहीं बनता। नम्रता, ज्ञान और प्रकाश में नही पहुंच पाता इसलिए **प्रकाश में रत्त होना हमारा कर्तव्य है।** यह है बेटा! आज का वाक्। अब मुझे समय मिलेगा तो मैं तुम्हें शेष चर्चाए कल प्रगट करूँगा। आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्राय हमारा यह कि हम **परमपिता-परमात्मा की आराधना करते हुए और देव की महिमा का गुणगान गाते हुए अपने मानव जीवन को हम सार्थक बनाएं और अपने जीवन की धाराओं को जान करके सागर से पार होने का प्रयास करें।** यह है बेटा! आज का वाक्। अब समय मिलेगा तो शेष चर्चाएं कल प्रगट करेगें। आज का वाक् समाप्त अब वेदो का पठन-पाठन।

ओ३म् देवा आभ्यां मनाः रथं आप्यां दधिः।

ओ३म् रथं मनः गायन्त्वाभिः देवा आभ्यां मनः प्राची रथं आप्यां मनाः।

ओ३म् यश्चाहं ब्रह्मण दधि वाचन्नमः दधिस्सर्वं ब्रह्म आपः।

अच्छा भगवन्! आज्ञा।

दिनाँक : 10-जून-1992
समय : रात्रि 8 बजे।
स्थान : चौ. लहरी सिंह,
कसेरवा खुर्द, मुमफ्फरनगर।

❐❐

उद्बोधन

हमारे यहाँ भिन्न-भिन्न प्रकार के ऋणों की चर्चा आती है। आज मैं उन ऋणों की चर्चा में जाना नहीं चाहता हूँ, केवल अपने प्यारे प्रभु का गुण-गान गाते हम अपना अध्ययन प्रारम्भ कर देते हैं। प्रायः सभी मानवों का यह कर्तव्य हो जाता है। **प्रातःकाल की अमृतमयी वेला में जागरुक हो जाने के पश्चात् प्रभु का चिन्तन करना, उसकी महिमा को विचारना मानव का एक महान कर्तव्य हो जाता है।** आज कोई मानव यह कह रहा है कि मैं किसी प्राणी के लिए यह कार्य कर रहा हूँ या चेतना के लिए या ईश्वर तत्व के लिए परन्तु यह नहीं माना जाता। **सँसार में जो भी कर्म करता है वह मानव स्वयं अपने ही लिए करता है। अपनेपन में ही उसे प्रसिद्धि प्राप्त होती है।** अपनेपन में ही उसे नाना प्रकार से उसका आत्म हृदय उसको धिक्कारने लगता है परन्तु जिसका अन्तरात्मा धिक्कारता है उस मानव को ही सँसार में जीने का अधिकार प्राप्त नहीं होना चाहिए। क्योंकि जीवन उन प्राणियों को सदैव प्राप्त होना चाहिए जिनको अपनी आत्मा पर अटूट श्रद्धा होती है, विश्वास होता है। जिसको अपनी आत्मा पर, स्वयँ की प्रवृत्तियों पर विश्वास और श्रद्धा नहीं होती उस मानव का अन्तरात्मा उसको धिक्कारता रहता है परन्तु वह सदैव अपने प्रकृति के अवेशों में आ करके अपनी प्रतिभा को ऐसे समाप्त कर देता है जैसे सायँकाल के सूर्य की किरणें अस्त हो जाती हैं। मानव का सँसार में एक ही कर्तव्य रहता है कि दुर्गुणों को त्यागना और शुभ कर्मो को अपनाना। यह मानव का विचित्र कर्तव्य होता है। जिसके ऊपर मानव को अध्ययन करना है।

पूज्यपाद गुरुदेव

अगस्त 2011/यौगिक प्रवचन

मासिक सहयोगी

श्री हरिराम गुप्ता, केसर स्टील, वजीरपुर, दिल्ली	1000 रुपये
श्री अरुण त्यागी, राजनगर, गाजियाबाद	500 रुपये
श्री सुकेश त्यागी, आर. के. पुरम, नई दिल्ली	500 रुपये
श्री संजीव त्यागी (दिनकरपुर) फरीदाबाद	500 रुपये
श्री विनोद त्यागी, सुपुत्रश्री-जयप्रकाशजी मकनपुर, गाजि.	500 रुपये
श्री पूनम त्यागी, नोएडा	500 रुपये
श्री वी. पी. सिंह, होशियारपुर, पंजाब	500 रुपये
डॉ. शुचि, डॉ. राजीव, आणद, गुजरात	250 रुपये
श्री नानकचन्द, देहरादून	200 रुपये
श्रीमती शशि गुप्ता, नोएडा,	125 रुपये
डॉ. ओ. पी. आर्य, आगरा	125 रुपये
श्री गुलजार सिंह, जगत पुरी, कृष्णा नगर, दिल्ली	100 रुपये
श्रीमती वीना त्यागी, (अलीगढ़) दिल्ली	100 रुपये

सूचना

यौगिक प्रवचन मासिक पत्रिका प्रत्येक मास की 10\11 तारीख को प्रेषित की जाती है। पत्रिका प्राप्त न होने की स्थिति में हमें एक सप्ताह के बाद लिखें। सूचना मिलने पर पत्रिका पुनः प्रेषित करेंगे।

E-Mail :-contact@shringirishi.in
Website::www.shringirishi.in

वैदिक अनुसन्धान समिति (पंजी.)

14 सितम्बर 1942 में, उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद जिले के, ग्राम खुर्रमपुर सलेमाबाद में, एक बालक का जन्म हुआ। बालक जन्म से ही एक विलक्षणता से युक्त था और विलक्षणता यह कि जब भी वह बालक सीधा, शवासन की मुद्रा में, कुछ अन्तराल लेट जाता या लिटा दिया जाता। तो उसकी गर्दन दायें बायें हिलने लगती, कुछ मन्त्रोच्चारण और उसके बाद पुरातन संस्कृति पर आधारित लगभग 45 मिनट तक एक दिव्य प्रवचन होता। बाल्यावस्था होने के कारण, प्रारम्भ में आवाज अस्पष्ट होती और जैसे आयु बढ़ने लगी वैसे ही आवाज और विषय दोनों ही स्पष्ट होने लगे। पर एक अपठित बालक के मुख से ऐसे दिव्य प्रवचन सुनकर, जनमानस आश्चर्य करने लगा। इस बालक की ऐसी दिव्य अवस्था और प्रवचनों की गूढ़ता के विषय में कोई भी कुछ कहने की स्थिति में नहीं था।

इस स्थिति का स्पष्टीकरण भी दिव्यात्मा के प्रवचनों से ही हुआ। कि यह आत्मा सृष्टि के आदिकाल से ही विभिन्न कालों में शृंङ्गी ऋषि की उपाधि से विभूषित और सतयुग के काल में आदि ब्रह्मा के शाप के कारण सभी युगो में जन्म का कारण बनी।

श्री कृष्णदत्त 'ब्रह्मचारीजी' नाम से सम्बोधित गुरुदेव इस जन्म में भले ही अपठित रहे, लेकिन शवासन की मुद्रा में आते ही इनका पूर्वजन्मित ज्ञान, उद्बुद्ध हो जाता और ये अन्तरिक्ष-स्थ आत्माओं को दिव्य उद्बोधन, प्रवचन करते। शरीर की स्थिति यहाँ होने के कारण हब सबको भी इनकी दिव्य वाणी सुनाई देती। इन प्रवचनों में ईश्वरीय सृष्टि का अद्भुत रहस्य समाया हुआ है, ब्रह्माण्ड की विशालता, सृष्टि का उद्देश्य, आत्मा-परमात्मा का स्वरूप, वैदिककालीन ऋषियों की जीवनचर्चा, ऐतिहासिक दिव्य पुरुषों का जीवन, योग, यज्ञ और आयुर्वेद का वास्तविक स्वरूप विभिन्न कालों का आँखों देखा सदृश्य वर्णन, वैदिक संस्कृति के प्राण कहे जाने वाले भगवान् राम और भगवान् कृष्ण की जीवन की दिव्यता का दर्शन, क्या कुछ दिव्य नहीं है इन प्रवचनों में? ये किसी भी मनुष्य का, समाज का और राष्ट्र का मार्ग करने का सामर्थ्य रखते हैं।

गुरुदेव की 20 वर्ष की अवस्था तक ये प्रवचन ऐसे ही जनमानस को आश्चर्यचकित और मार्गदर्शन करते रहे। परन्तु दिल्ली के कुछ प्रबुद्ध महानभावों ने प्रवचनों की इस निधि को संग्रहित (टेपरिकार्ड) करके पुस्तक रूप में प्रकाशित करने का निश्चय किया, जिसके लिए ''वैदिक अनुसंधान समिति'' नामक संस्था का गठन किया गया। जिसके द्वारा सन् 1962 से प्रवचनों का संग्रह और प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। इस दिव्यात्मा ने पूर्व निर्धारित 50 वर्ष के जीवन को भोगकर 1992 में महाप्रयाण किया।

इस अन्तराल गुरुदेव के लगभग 1400 प्रवचन रिकार्ड किये गये। जिनको धीरे-धीरे पुस्तक रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। वैदिक जीवन और वैदिक संस्कृति का जो स्वरूप इनमें समाया हुआ है, उसके संरक्षण और प्रसारण के लिए हर वैदिक धर्मी को सहयोगी बनना चाहिए, जिससे वसुधैव कुटुम्बकम की संस्कृति से निहित यह महान् ज्ञान जनमानस में प्रसारित हो सके और उसके उत्थान का मार्ग प्रशस्त कर सके।

वैदिक अनुसंधान, समिति (पंजी.)

योगनिष्ठ पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (शृङ्गी ऋषि) की अमृतवाणी संहीता के रूप में

1. आत्म-लोक	25.00	31. दिव्य-ज्ञान	35.00
2. आत्मा व योग-साधना	25.00	32. महर्षि-विश्वामित्र का धनुर्याग	25.00
3. अलङ्कार-व्याख्या	35.00	33. आत्म-उत्थान	30.00
4. यज्ञ-प्रसाद अर्थात् यज्ञ का महत्व	40.00	34. तप का महत्त्व	30.00
5. धर्म का मर्म	30.00	35. अध्यात्मवाद	25.00
6. देवपूजा	20.00	36. ब्रह्म-विज्ञान	35.00
7. रामायण के रहस्य	35.00	37. वैदिक-प्रभा	30.00
8. महाभारत के रहस्य	20.00	38. प्रकाश की ओर	35.00
9. महाराजा-रघु का याग	25.00	39. कर्तव्य में राष्ट्र	35.00
10. मोक्ष प्राप्ति का मार्ग	30.00	40. वैदिक-विज्ञान	35.00
11. वनस्पति से दीर्घ-आयु	25.00	41. धर्म से जीवन	30.00
12. चित्त की वृत्तियों का निरोध	25.00	42. आत्मा का भोजन	35.00
13. आत्मा, प्राण और योग	20.00	43. Yogic Wisdom of Ancient Rishis	50.00
14. पञ्च-महायज्ञ	30.00	44. पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज एवम्, कर्मभूमि लाक्षागृह	10.00
15. अश्वमेघ-याग और चन्द्रसूक्त	30.00	45. साधना	30.00
16. याग-मन्जूषा	25.00	46. यज्ञोमयी-विष्णु	40.00
17. आत्म-दर्शन	25.00	47. त्रेताकालीन-विज्ञान	40.00
18. पुत्रेष्टि-याग और मातृ-दर्शन	25.00	48. योगिक प्रवचन माला भाग-6	60.00
19. यौगिक प्रव. मा. (भाग 1-5) प्रत्येक	50.00	49. स्वर्ग का मार्ग	40.00
20. वेद पारायण-यज्ञ का विधि विधान	25.00	50. शंका-निवारण	25.00
21. रावण-इतिहास	40.00	51. यौगिक प्रवचन माला भाग-7	60.00
22. याग और तपस्या	45.00	52. माता मदालसा	40.00
23. यज्ञ एवं औषधि विज्ञान	40.00		
24. यागमयी-साधना	30.00		
25. यागमयी-सृष्टि	25.00		
26. दिव्य-रामकथा	100.00		
27. महाभारत एक दिव्य दृष्टि	80.00		
28. याग-चयन	25.00		
29. ज्ञान-कर्म-उपासना	25.00		
30. अतीत का दिग्दर्शन (भाग 1-3) प्रत्येक	100.00		